**तिरूअंतपूरम।** दलाईलामा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सारणया बहन।

**सावनेर।** 'समय की पुकार परमात्म शक्ति से स्वर्णिम संसार' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भाजापा के अध्यक्ष नितिन गडकरी, उर्जा मंत्री सुनील केदार, ब्र.कु.पुष्पारानी, ब्र.कु.सुरेखा तथा अन्य।

**बार्शी।** कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए रेवणसिद्व शिवाचार्य परंडकर महाराज, माउण्ट आबू की ब्र.कु.गीता, सांसद दिलीप सोपान, ब्र.कु.सोमप्रभा, ब्र.कु.संगीता तथा अन्य।

## आपकी खुशी आपके पास

Peace of Mind

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवशाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी एडवरटाईज के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों के साथ ''पीस ऑफ माइंड चैनल'' आपके शहर उपलब्ध है। इस चैनल को देखने व अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

- DTH - Service For Individuals.
- Only In Reliance BIG TV DTH

**For Cable Operator**

- Hardware - MPEG4 Receiver [beetle & solid Jujustu etc.]
- Setellite - Insate 4A
- Frequency - 4054
- Symbol Rate - 13230
- Polarisation - Horizontal

अधिक जानकारी के लिए निम्न नम्बर पर सम्पर्क करें:- 08014777111, 09549991111

## अपनी प्रति आज ही बुक करायें

- अगला अंक शिवरात्रि विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। सेवा के लिए जिस भी भाई-बहन को चाहिए वे निम्न मोबाईल नं. पर सम्पर्क करें - 09414154344. ईमेल - mediabkm@gmail.com

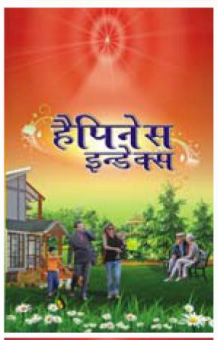


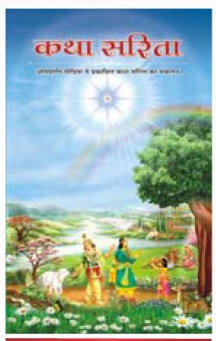


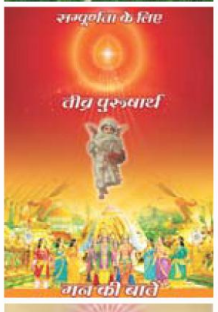


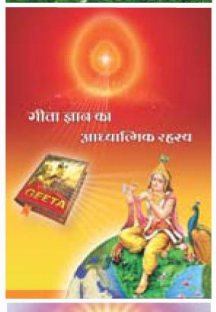


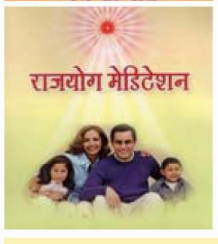


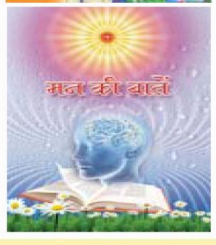


## सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ, **भगवान कौन? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक**, हैप्पीनेस इंडेक्स, कथा सारिता उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

**प्रश्न-ईश्वरीय महावाक्यों में शिवबाबा ने हमें बेफिक्र बादशाह बनने को कहा है। यह काम है बड़ा मुश्किल परन्तु चिन्ताएं भी तो चिता के समान है। हर कोई इससे छूटना चाहता है। इसकी सहज विधि क्या है?**

**उत्तर** -चिन्ताएं मनुष्य को जिन्दा ही जलाती हैं, जबकि चिता पर तो मनुष्य मृत्यु के बाद केवल एक ही बार जलता है, चिन्ताएं तो रोज जलाती हैं। चिंताओं का रोग बढ़ता ही जा रहा है, इससे शारीरिक रोग भी बढ़ रहे हैं। समाधान मनुष्यों के पास नहीं है, परन्तु ब्रह्मा वत्सों के पास है।

शिव बाबा के सामने भविष्य का हर पल स्पष्ट है, वे जानते हैं कि भविष्य में विश्व में चिन्ताओं का सागर लहराने वाला है। जो योगी बेफिक्र बादशाह बनेंगे, वे ही सबको चिन्ताओं से मुक्त कर सकेंगे।

लक्ष्य बना लें कि मुझे चिंताएं नहीं करनी है। कइयों को छोटी-छोटी बातों में चिन्ता करने की आदत बन जाती है। संकल्प कर लें, सब कुछ ठीक हो जाए या ड्रामा में जो होना होगा, हो जायेगा। भला हमारी चिन्ता से क्या होगा। ड्रामा में सब कुछ निश्चित है, यह निश्चय रखकर ही हम निश्चिंत हो सकते हैं। प्रतिदिन सबेरे उठते ही खुले दिल से संकल्प करना -''मैं बेफिक्र बादशाह हूँ।'' मेरी चिन्ता तो स्वयं भगवान करता है, मेरी जिम्मेदारी तो सर्वशक्तिवान ने ले ली है। इस नशे में स्वयं को ले आना कि कौन मेरा साथी है..! वो, जिसका साथ होने पर कोई मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकता। किसने मेरा हाथ पकड़ा है.. किसके हाथों में मैने अपने जीवन की बागडोर सौंपी है... कौन मेरी जीवन नैया का खिवैय्या बना है.. किसका हाथ मेरे सिर पर है। इस तरह दस मिनट खुले आकाश के नीचे श्रेष्ठ चिंतन में बिताना तो एहसास होने लगेगा कि तुम्हें तो चिंता करने की जरूरत ही नहीं, तुम्हारी चिंता तो भगवान करता है। तुम तो उन छोटी-छोटी बातों की चिन्ता कर रहे हो जो चिंता के योग्य ही नहीं है।

**प्रश्न -घर में काम धंधे की फिक्र, बच्चों की फिक्र, मंहगाई के कारण फिक्र, कन्याओं के चरित्र को लेकर फिक्र बनी ही रहती है। इन सबसे मुक्त कैसे हो?**

**उत्तर** -चाहे कुमार, कुमारी हो या गृहस्थी, व्यवसायी हो या नौकरी पेशे वाले, धनवान हो या गरीब। चिंताएं तो हर मन को व्यथित कर रही है। आजकल बढ़ते हुए रोग भी मनुष्य को चिंतित व परेशान कर रहे हैं। बाबा ने इसकी सहज विधि बता दी। मेरे को तेरे में बदल दो। फिक्र बाप को देकर फखुर (ईश्वरीय नशा) ले लो। इसका थोड़ा सा विस्तार प्रस्तुत है।

'मेरा घर व मेरे बच्चे', 'मेरी जिम्मेवारी' - इन संकल्पों को बदलें कि ये मेरा घर नहीं, बाबा का यज्ञ है, ये मेरे बच्चे नहीं, आत्माएँ हैं, ये भगवान के बच्चे हैं और सबकी जिम्मेदारी बाबा को दे दो। बाबा को अपने घर का हैंड बना लो। यहां कमी क्या रह जाती है कि मुख से तो कहते हैं मेरा बाबा परन्तु न उनसे अपनापन रहता न उनके लिए कुछ करते। रोज सबेरे अपने बच्चों को बाबा के हाथों में सौंप दिया करो। इस फखुर में रहने लगो कि बाबा सामने खड़ा होकर कह रहा है बच्चे तुम्हारा जिम्मेदार मैं हूँ।

बच्चों के चरित्र की चिंता की बात आजकल सार्थक भी है। आप इस फखुर में रहने लगो कि मेरे बच्चों के सिर पर तो सर्वशक्तिवान की छत्रछाया है, वे सदा सेफ हैं। मेरी देह के रोग मुझे परेशान करते हैं या मृत्यु चिंतित करती है तो मन में खुशी के व नशे के श्रेष्ठ संकल्प रखें। बीमारी तो इस देह में है, मुझमें नहीं, मैं तो स्वस्थ हूँ। बीमारी आई है सो चली जाएगी, असाध्य कुछ भी नहीं है, सब ठीक होगा और यदि मृत्यु भी हुई तो हम हंसते-हंसते बाबा के पास जाएंगे, दुनिया देखेगी, हमारी मृत्यु।

यदि आपके सामने कोई समस्या है, कोर्ट में केस है, जमीन का विवाद है या धन का अभाव है तो अपनी समस्या प्रभु अर्पण करके उसमें विश्वास रखते हुए धैर्यपूर्वक परिणाम देखें। तत्काल सब कुछ ठीक हो जाएगा, यह सोचकर देर होने पर परेशान भी न हों क्योंकि हर बात में कर्म गति भी अपना प्रभाव डाल रही है। निश्चिंत होकर योग-साधना बढ़ा दें, पुण्य कर्म करें तो सफलता दिखाई देगी।

समर्पण भाव से मन के बोझ बाबा को देना -यह अलौकिक कला है। आप रात्रि में अपने सारे बोझ एक पत्र के रूप में अपने खुदा दोस्त को अर्पण कर सकते हैं, इसके बाद बस देखो कि वह क्या करता है।

**प्रश्न - बाबा ने बेफिक्र बादशाह के साथ डबल ताजधारी व स्वराज्य अधिकारी को जोड़ा, परन्तु डबल ताज तो सतयुग में है। क्या अब भी हम डबल ताजधारी हैं? तथा स्वराज्य अधिकारी का निश्चिंत जीवन से क्या सम्बन्ध है?**

**उत्तर** - जैसे देवताओं के सिर पर डबल ताज है, वैसे ही ज्ञानी व योगी आत्माओं के सिर पर भी ये ताज है। हमारे सिर पर जो प्रकाश का ताज है वह हमें ज्ञान से, पवित्रता से व आत्मा की ज्योति से प्राप्त हो रहा है। जो माइट (शक्ति) का ताज है, उसमें भी ज्ञान का बल, पवित्रता का बल, स्वमान का बल व योग का बल सम्मिलित है।

हम जितना ज्ञान को यूज करेंगे, उतना ही निश्चिंत रहेंगे और जितने शक्तिशाली बनेंगे, उतने ही बेफिक्र रहेंगे। बादशाह सिंहासन पर बैठता है इसका अर्थ है सिंह का आसन अर्थात बादशाह शेर के समान शक्तिशाली अर्थात मास्टर सर्वशक्तिवान होता है।

बेफिक्र बादशाह बनने के लिए अपने विचारों को महान बनायें अर्थात अपना प्रकाश का ताज बढ़ायें। ऊँचे विचारों के समक्ष सभी बातें छोटी होती हैं। कोई भी बात हमारी खुशी को खत्म न करे तब हैं हम बेफिक्र बादशाह।

हम अपनी शक्तियों को मनन द्वारा, योग द्वारा व पवित्रता के द्वारा इतनी बढ़ायें कि हम स्वयं को हर विघ्न के 'विघ्न-विनाशक' महसूस करें तथा हर समस्या से अधिक शक्तिशाली पायें। हर समस्या हमें अनुभवी बनाये, प्रत्येक विघ्न सफलता के द्वार खोले।

इसी तरह हमें गहन अनुभूति रहे कि मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ अर्थात स्वयं का राजा हूँ, मन का मालिक हूँ, मेरे संस्कारों पर व कर्मेन्द्रियों पर मेरा राज्य है। यह देह मेरे अधीन है। मेरी या अन्य की देह मुझे आकर्षित नहीं कर सकती। आकर्षण से मुक्त आत्मा ही उड़ान भरकर ब्रह्मलोक में व सूक्ष्म लोक में विचरण कर सकती है, वही बेफिक्र बादशाह है।

जो स्वयं पर राज्य करता है, वही तो विश्व पर राज्य करता है अर्थात वह यहां भी बादशाह है व स्वर्ग में भी बादशाह है। वही भगवान के दिल पर भी राज्य करता है। जिस दिल पर चिन्ताएं राज्य करती हो, वहां प्रभु का वास भला कैसे हो सकता है। इसलिए यह सूक्ष्म नशा व स्मृति सदा रहे कि मैं आत्मा बेफिक्र बादशाह भृकुटि सिंहासन पर विराजमान स्वराज्य अधिकारी हूँ।

**प्रश्न - बाबा ने अपने महावाक्यों में आदि से ब्रह्मा बाबा को फालो करने को कहा। प्लीज स्पष्ट करें कि ब्रह्मा बाबा कैसे पूरा जीवन बेफिक्र बादशाह रहे?**

**उत्तर** -वो महान आत्मा जिनके तन में स्वयं निराकार भगवान ने प्रवेश कर युग परिवर्तन का महान कार्य किया। जो कभी श्रीकृष्ण रूप में धरा की सुंदरता बढ़ाते थे, वे यहां भी बादशाह थे और वहां भी। उनकी चाल, उनकी दृष्टि, उनका मस्तक व उनके बोल उनके बेफिक्र बादशाह की छवि दिखाते थे। जबसे निराकार सर्वशक्तिवान शिव ने उन्हें अपना माध्यम बनाकर सबको पवित्रता का संदेश दिया, उन पर गालियों की बौछार प्रारंभ हुई, कलंक लगे परन्तु वे रहे मस्त फकीर। यज्ञ रचा, चौदह वर्ष बाद उसमें बेगरी पार्ट आ गया। 380 वत्सों की पालना का भार परन्तु पास में कौड़ी नहीं। तो भी सबने उन्हें देखा अचल अडोल, एक बल एक भरोसे। वो सभी उन्हें छोड़कर जाने लगे जो उनके अपने थे, जिन्हें उन्होंने अति प्यार से पाला था, जिनसे उन्होंने कुछ करने की श्रेष्ठ आशाएं पाली थी, परन्तु वे देखे गये साक्षी। वे आबू में आये, सेवाएं प्रारंभ हुई, चारों ओर विरोध के स्वर गूँजे, परन्तु ज्ञान प्रकाश फैलाने में वे हिचके नहीं। और बिना हिम्मत हारे अपनी शक्ति सेना में बल भरते रहे। शारीरिक व्याधियों को, ऑपरेशन को उन्होंने सहज भाव से पार किया। किसी ने भी उनके चेहरे पर पीड़ा की रेखाएं नहीं देखी। क्योंकि वे तो देह से न्यारे थे। गहन साधना के मार्ग में, संगठन को साथ लेकर चलने में अनेक व्यवधानों को उन्होंने पार किया परन्तु वे अचल अडोल रहे। हर परीक्षा में वे फुल पास हुए, हर विघ्न ने उन्हें शक्तिशाली बनाया। सचमुच वे बेफिक्र बादशाह थे। हों भी क्यों न जबकि सर्वशक्तिवान सदा उनके साथ थे।

ये थी उनकी कुछ झलकियां। हम भी बातों से घबरायें नहीं। हमारे सिर पर सर्वशक्तिवान की छत्रछाया है। हम भी स्वयं शिव शक्तियां हैं। अपने स्वमान में रहें तो यहीं स्वयं को बादशाह अनुभव करेंगे।

## जरा सोचो..?

**जो भगवान तुम्हारी जन्म-जन्म मनोकामनाएं पूर्ण करता आया...**
**क्या उसकी श्रेष्ठ इच्छा को पूर्ण करने के लिए तुम्हारे मन में उमंग है...**